181. Pc. 90. 14.

काव्यसंग्रह ॥

जिसमें

हरप्रकार के कवित्त व सवैयादि अति मनोहर सरलतासे वर्णित हैं।

जिसको

उन्नाव प्रदेशांतर्गत बदर्काग्राम निवासी शिवराजबलीशुक्लने प्रोप्राइटर सेठटीकारामजी की आज्ञानुसार अतिपरिश्रम से सर्व सज्जनों के चित्त विनोदार्थ संग्रह किया।

उसीको
प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजीने निज "ज्ञानभास्कर प्रेस"
बाराबङ्की में छपवाकर प्रकाशित किया।
अगस्त सन् १९०४ ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

काव्यसंग्रह

एकरदन गजवदनसों बिनयकरहुँ करजोरि ।
ह्वै प्रसन्न मोहिं अधमको दीजै बुद्धि अथोरि॥
अम्बा जगजाहिरतुही तव पद पद्म मनाय ।
रचन चहत या ग्रन्थको कीजै आनिसहाय ॥
नहिं बिद्या नहिं चतुरहूँ नहिं कबिताको ज्ञान ।
लीजै कबिजन शरण में मोहिं तुच्छनादान ॥
बिबुध बिप्र बुधगुरुचरण बन्दौं बारम्बार ।
भूलचूक जो होइ कछु ताको लेहु सम्हार ॥

कोटि मार्त्तण्ड चन्द्रमण्डल सुमगक्रीट कुण्डल ललित अलकावलि भुजैं गई । राजत प्रत्यक्ष मुक्ताहल त्रिभंगी अंग अंगन जरीतपट प्रीतिपट लैगई । झलक झलाझलकी झांकी सों झपाक चित्त २ ते निकरिमेरे हगन हितैगई । हगन ते दौरि मन मन ते तमाम तन तनते तेतक्ष रोम २ छबिछैगई १॥

आनन्दकेकन्द निर्द्वंद चरणारविन्द बन्दत सकल सुर संकट हरणहैं। सोहैं शंख चक्र गज अंकुश धनुष धेनुमीन पदकमल बसुधाहूके धरण हैं॥ मेरीजान चिंतामणि-हूकेसब चिन्तामणि भंनत गोपाल अशरण के शरण हैं। कारणकरण जगतारण तरण जनलाजके जहाज ब्रजराजके चरणहैं॥२॥

तलहैं अरुण नखबरण उपल कामअति अभिराम आभा उमगि अनन्द के। सन्त मन रंजन प्रयागराज मज्जन सुभक्त नैन अंजन हैं भंजन भवफन्द के। काम गर्व गञ्जन प्रकाम प्रेम पुंजन प्रसिद्धि सिद्धिकं-जन बिहारी सुखकन्द के। आपदा हरण सर्वसम्पदाकरण सदा चैन आचरणहैं चरण रामचन्द्र के॥ ३॥

गिरिकोउठाय ब्रजगोपको बचायलियो अनलते उबार्यो पुनि बालक मँजारीको॥ गजकी अरजसुनि ग्राहते छुटायलीनो रा-ख्योव्रतनेमधर्म पांडवकीनारीको॥ राख्यो

गजघंटतरे बालक विहंगमको राख्योपण भारतमें भीषम ब्रह्मचारीको ॥ त्रिविधिताप हारीनिज संतन सुसुखकारी मोहितोभरो-सोभारी ऐसेगिरिधारीको ॥ ४ ॥ केऊकर्म वादीकेऊ अन्नभौंप्रसादीभये केतनकीमति भईन्याय सांख्यमस्तकी ॥ केते जगदानी यमनेमको प्रमाणकरैं केतेपरतीतगहें तीरथ हूहस्तकी ॥ केऊब्रह्मचारी केऊयोगीजटाधारी भयेबानप्रस्थ केतनको दयासाँच सत्यकी॥ मैंतोहूंपतित मेरीकौन द्योसव्हैहैगति कम-लापतिराखौ पतिमोसे पतितकी ॥ ५ ॥ केऊ करैंसेवा केऊराखतहैं लेवादेवा केऊकरिखान ताकेखतहीका हिल्लाहै ॥ केतेकमेवासी केते दानहुंकेआसीकेतेक गानविषयकीबि धि राखिल्लाहै ॥ केतेमहाक्रूरकेतेसबगुणपूर केतेधीरकेतेअतिबांकेरणखेतमेंअरिल्लाहै ॥ मैंतोमहाक्रूरताकोउद्यमनाहिंसूरएकयशोम-तवारोकारोहमारोउसिल्लाहै॥ ६ ॥ कमला निवास निजदासनको पूरैंआश ताकेविश्वा-

सविषभख्योमीराबाईहै ॥ केशवकमलनयन संतनकरन चैन सैनहितभये भूपमंजनको नाईहै ॥ इन्द्रजूकोहर्यो मान सुदामाको दियोदानभक्तजानिछानिनामदेवजीकीछाई है। नंदकेकन्हाईनिजसंतनसुखदाईबलदेवजू केभाई सोहमारेसहाईहै ॥ ७ ॥ केऊप्रेमलक्ष णाभक्तिमेंबिचक्षणहैं नीकेभांति सेवाकरजा नैनिधिज्ञानकी॥केऊतत्वबोधसेतीआतमको शोधकरैं साधैंनित्य योगगतिजानैं रोधपान की ॥ केऊतनुसासना सबासनायतनसहैंकेऊ कउपासना गणेशशिव भानकी ॥ हौंताहूं अजान ताकीकाहूसे पिछाननाहीं कोऊकछु जानैहूंतो जानूँनाथजानकी ॥ ८ ॥ काहूके अधारसेवा बणिजब्योपारको काहूकेअधार थितिबित्तखेतगाँवको ॥ काहूके अधारतनु सारभ्रातबंधुनको काहूकेअधार प्रियसार निजनामको ॥ काहूकेअधार बिद्याबुद्धिबल कोहै काहूकेअधारहाथी घोड़ाधनधामको॥ मैंतोनिराधार मेरीहारिकरागेसार मेरेतो

अधार एककेवलहरिनामको ॥ ९ ॥ केऊ
ध्यानधारणासमाधि विषैलीनभये मिलावैं
परमात्माको आत्मा विचारीको ॥ केतेनि-
ष्काम मनअजपाको जापजपैं केतभजैंशं-
कर धतूरकेअहारीको ॥ केतेसकाममंत्रयंत्र
आठौयामजपैं केतेलोभदाम केतेगणेशसुख
कारीको ॥ तेरोध्यानज्ञानतेरो आसरोतिहा
रोमोहिंकोईकछुध्यावो मैंतोध्यावौं गिरधा-
रीको ॥ १० ॥जैसेखगबालकको राखिलियो
घंटातरेलाक्षागृहबीचराख्यो पांडवसबसाथ
को ॥ राखिलियो परीक्षितको माताकेउदर
माहिं राख्योब्रजग्वालबाल गिरधार्योनिज
हाथको । पारथके स्वारथको सारथीभयेहौ
तुमसखानिज जानिकैजितायोहै भारतको॥
पावक प्रजारितहां राखिहैमँजारीको वैसी
भांतिराखौनाथमोसे अनाथको ॥ ११॥ छन्द
मत्तगयंद ॥ आरतनेक गुहारसुनी तबदीनद-
यालुकी रीतखरीकी ॥ दौरतभेतजिकैनिज
धाम सुबातसुनी तबभौरपरीकी ॥ मेरियबेर

बिलंबरहे सुकहातकसीरकरीजुहरीकी ॥
धायसवेर एनीजनटेर करीनहिंबेरे सुबेरकरी
की ॥ १२ ॥ द्रौपदीकी लाजकाज द्वारिकासे
दौरिआये चीरकोबढ़ायटेक राखीसभ्यशी-
लकी ॥ पुत्रहेतनारायण नामलेत ततकाल
काटेयमजाल गतिभई अजामीलकी ॥ मु-
ठीएकचावलकी खातहिनिहालकियो कैसी
दशाभईउन ब्राह्मणकुचालकी ॥ मेरेहूकरो
बीढील होतहोकहाबमील तबतोनकरीढील
टेरसुनापालकी ॥ १३ ॥ लीला अगाधब्रज
बासिनकेहेतसेती धनाजूकेखेत बिनबोयेउ
पजाईहै । भीष्मकोपण औरद्रौपदीकी लाज
राखी अशरणशरणकीरीति बेदमध्यगाईहै ॥
बूड़तबचायोब्रज करपरगिरिधार्यो साह
बनरसीकी हुंडीसकराईहै ॥ करियेनबारअ
बसुनिये पुकारमेरी मोपरब्रजराज गजराज
कीसीआईहै ॥ १४ ॥ दीनबन्धु दयासिन्धु
मेटन दुखद्वंदके ऐसेतो अनेक बिबिधे ग्रंथ-
न में कही है ॥ गोप में -हतेउबारेराजानंध्

ते निवारे भारत में पारथ हित एते शरसही है ॥ नामा कबीरगीधगणिकाअरुकीरतारे चीरबाढ़ि द्रौपदीकोजगतयशलही है ॥ बेर माँझधारमेरो दुखवारदेकै एहोनाथकरुणानिधिमेरोहाथहीगही है ॥ १५ ॥

चन्द्र बिलोकन बालचली सुबिशालअटा पै चढ़ी चपलासी । आनन चन्दसमान उयो द्युति दामिनिसी चहुँ ओर प्रकाशी । चौंकि उठे तिथि के सबलोगरु पण्डितसों झगरैं ब्रजबासी । ज्योतिष आवतहै न तुम्हैं लखौ चौथिहै आजु कि पूरणमासी ॥१६॥

सुरंग रंग चूनरी कुसुम्मरंग सेभरीमनौ अनंग की छरी बनी ठनी सुथान में । लखैं हगैं अनूप की दिवान काम भूप की खड़ी तरंग रूप की अलीररी बितान में ॥ गई शृँगार साजिकै सखीन संग भाजिकै दुरै गुपाल जायकै सुकुञ्ज की लतान में । मुठी गुलाल से भरी निहारती खड़ी खड़ी हरी हरी पुकारती हरी-हरी लतान में ॥१७॥

चूमि रलेतीमुखतोतरेबचनवारोगुटमुटवा-
रोदेखि अति हरषावती। उपमालखाऊँ तेज
पाऊँनागनाऊँकहा भणत केदार ब्रह्म रानीं
यशगावती। मोदक मिठान खान पान सब
धारोआन खातगजआनन अनंदकंद पाव
ती। निरखिमहेश प्रेमपुलकितभयो गात
गिरिजा गणेशलियेगोदमें खिलावती १८॥
गौरशरीरमे गौरिविराजत मौरहैऔरही
रीतिकोजाके। नागनकोउपबीतलसै बलदेव
कहैशशिभालमेंताके। दानकरैपलमेंफलचा-
रिऔ टारत अंकलिखे बिधनाके। शंकरनाम
निशंकजपौमैंभरोसेरहौंनिशवासरवाके १९॥
तत्क्षण धरत तनक अरचत जनगनगन
सघन कनकदरखतदर। तरलनयनतन धर-
तअधरतन करतलकरल सरलगरल घर।
अटत अजर जस रटत गहन घन सघन
रजत रज रजत अचल धर। दहत सकल
अघ दरसन दरशत दरद न रहत कहत नर
हर हर ॥ २० ॥

जौने ब्रजबासिनके चित्तकाहिं मोहिंलि-योकरिकै अनेकलीला मोहनकहायोहै । जौने नखपरगिरि फूससोउठाय लीन्हो इंद्रको अहंयूतोरिब्रजकोबचायोहै । जौनेपांडुजाया के आरत वचनसुनि बसनकोरूपधरि चीर को बढायोहै । तौनेब्रजराज पाहिंबिनवै शिवराजबली करियोसहाय अबतेरी शरण आयो है ॥ २१ ॥

जाहीहाथ गिरिउठाय गिरवर गिरधारी भयो जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग कालीहै । जाही हाथ तास्यो औ उबास्यो हाथहाथी गहिजाही हाथ सिंधुमथिलक्ष्मी निकारी है । जाहीहाथ धनुष चढ़ायो है सीतापति जाहीहाथ रावण सँहारि लंका जारीहै । हौं तौ मैं अनाथ कर जोरि कहतदीनानाथ वाही हाथ मेरोहाथ गहिबे कि बारी है ॥ २२ ॥

दीननकी बाणी सुनिधाये धनु पाणीतुम आनी नहिं देरयहि सङ्कटबनायकै । सिंधु

में प्रकट भये गंजहितदीनबन्धुपाल्यो प्रह-
लादहरिकंभ दरशायकै। नारी निशिचारी
बशविकल बिचारी यह एहो असुरारी दुख
नाशौ किन आयकै। बनमें भुलाने की
बिकाने हाथ दीनबन्धुसागर में सोये कि
साँकरे में जायकै॥ २३

पाय अनुशासन दुशासन करि कोपधा-
यो द्रुपद सुताको चीर गहे भीर भारी है।
भीषम करण द्रोण बैठे ब्रतधारी तहां का-
मिनी की ओर केहूँ नेक ना निहारी है।
सुनिकै पुकार धाये द्वारिका से यदुराई
बाढ़तदुकूल खैंचि भुजबल हारीहै। सारी
बीचनारी है कि नारी बीच सारी है कि
सारिही कि नारीहै किनारिहीकीसारीहै २४

बांमेंअंग संगसोहैं जनक दुलारीपीत
अम्बरझलक तनअंग द्युतिकारीहै। मोतिन
चमक चहुँओरसोहै भारीकीट कुण्डल क-
पोलनपै शिवराज बलिहारीहै॥ निंदक
कुपंथी खलमंडल बिडिबेको लखनसमेत

शरचाप करधारीहै। अवधबिहारीयहबिनय हमारी सत्यधर्म रखवारीकी तिहारी अब ब्ारी है ॥ २५ ॥

नीलश्यामगात सरसीरुहसुहायेनैन अयन सुखमाको करतार रचिदीनाहै । कारेघुंघु-वारे कचसुन्दर सँवारेश्रुति मंजुमकराकृत मनोजमन लीनाहै । नगरनरनारीहैं सकल उमंगअंग मानो घन सुंदरबिलोकिहूबसीना है । ऐरीमतिहीना लेहुलोचन सुखीना सिया सोनेकी अँगूठी रामसाँवरो नगीनाहै॥२६ ॥

मुनिमखराखिमारिताड़कासुबाहुबीरचरण छुआइजिनशिलातारिदीनाहै। भाषतबिहारी आय मिथिलाशहरमाहिं नरअरुनारिनको मनहरिलीनाहै । सोईएसलोने सुकुमार दशरत्थजूके राजतानिहारि कोटिकामछबि छीनाहै । मेरीमहरानी तीनोंलोकमें प्रमाणी सियासोनेकी अँगूठी राम साँवरो नगी-ना है ॥ २७॥

ग्रीवमुंडमालतीनलोचनबिशालंलालअति

बिकराल भलोबदन बनाईहै। दारिदअराति को सोमूलते उपारदेवि बिश्वसेबिजैसेचंड मुंडको मराईहै। चिरञ्जीव स्वतधन धान्य औ कलत्रयुत मोहिंदे सुयशतेरो तीनिलोक छाईहै। अम्ब कालिकाको अवलंबजयराम-जूकोरामभक्तिदेबेमेंबिलम्बक्यों लगाईहै २८

कौनयुगलागो नहिं काहत कछुबनै बात सिंह को सियार घुरैं बाजडरैं चिरिया को। लुच्चनको हाट औ बजारदार शोहदाभये झूंठे सो दलाल हैं खरीददार बिरियाको। दिग्गज दँतीलनकहँ मेंढुकी दबावैं हाय शिवकबिसोहात नहीं राजभयो तिरियाको। मङ्गाभेधनी औ तिलङ्गा भलेमानुषभेनंगा मे थापदार गङ्गा भई किरियाको ॥२९॥

ग्रहिनदरिद्र ग्रहत्यागिन बिभूति दीन्हों पापिनप्रमोद पुण्यवन्तन छलागयो। गृहण गृहीशशनिराजत सु चित्त चित्त सुखी रघु व्यालशेषभारसों दलागयो।फेरिन फिरावत गुणीन ग्रह द्वार २ गुणसों बिहीनता हि बैठे हे

भलाभयो । कहांलौं कहौं एक आनन सौं चूकतेरी नाम चतुराननपै चूकतै चलागयो ॥३०॥

देवतर सागर रतनागरको खारीकरि मृग-मथदीन्हो ना सुगंधस्वानमेंभयो । बकुलन को श्वेतकरिकोकिलनबैनदै ब्राह्मणभिखारी नीच धामसम्प्रदादयो । काबुलकोदेशजहां मुगलपछारैंधेनु मेवाकरीताहीं औ करील ब्रजमेंबयो । कौन२चूकतेरीकहौं एकआनन सौं नामचतुरानन पैचूकतैचलागयो ॥३१॥

अनूप रूप गात है कपूर पान खात है सखीन संगजात है स्वरूप के गुमान में । कहैं प्रवीण कान्ह बांसुरी सजी बजी सुरंग रागसौं रँगीभरीपरी सुतान कानमें ॥ सम्हाः रही न देह की रही सुधि न गेह की छकी छबीली नेह की परी सखीन आन में । नैन नीर ढारती न चीरहू सम्हारती हरी हरी पुकारती हरी २ लतान में ॥३२॥

कोकिला करी कुहूक बिरह की उठी जु

हूक दामिनी दमकि रही सावनी घटानमें। अंगके बसन लाल गर मुकता के माल बेंदी अरु तिलके माल छूटिगे लतान में ॥ सोने सों सरस गात बांसुरी बजी है प्रात लोक लाजहूं तजी परी अवाज कान में। हरी हरी कदम्ब की हरी हरी छरी लिये हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान में ॥२३॥

शोरकियो यमपुरमें जाय यमदूत मिलि- एरे यमराज कछुजानैतें उपाइ हैं। द्विज बलदेव अबआवत हैं आइगये पापी असु- रापी नीरगंगाते नहाइहैं। तिनाहित देवनकी अंगना बिमानयुत ठाढ़ीढ़ारिचौर निजलो- कहि लैजाइ हैं। शंभुहित लाइ हैं विमल गुण गाइ हैं औ मुक्तिपद पाइ हैं न तेरे धाम आइ हैं ॥२४॥

ध्यानधरैं नितगंगतरंगको सादरसोगुण गायो करैंजू। आठहुयाम भजैं श्रीमाधव सो सुमिरे सुखपायो करैंजू। सादर पूजनकै बलदेव अक्षयबटके पहँ जायो करैंजू। तार

यही करतार करौ मन मेरो त्रिवेणी नहायो करैजू ॥३५॥

वेदमतिशोधि२देखिकै पुराणसब संतऔ असंतनको भेदबिलगावतो। कायरकपूत कूरकलिके कुचालीलोग कौन रामनामको चरचाचलावतो। कहैं कविबेनीमन मानुरे प्रमाणयह पवितेकठोर कौनाहियो उमगाव तो। भारी भवसागरके लोग कैसेहोते पार जोन यहरामायण तुलसी बनावतो ॥३६॥

दूतकहैं यमकेयमसों हम पातकीनेक छुयेनाहिंपावते। जादिनसे तुलसीकृतफैलि रहीजगमें सबभेद बतावते। नीकीबनीअरु भक्तिसनी सियरामको प्रेमहिए उमगावते। नीके पढैंऔ सुनैचितदै ते बिमानचढ़ै सुर लोक सिधावते ॥३७॥

लगीआग तनमेंफिरूँ बागबनमें मिले नाघरनमें करूँमैं कहारी। चहूंओरगोकुल गलीमैं निहारी बतायोनकाहू मैं जाऊंकहां री॥ मैंतोहेरि हारी अकेली बिचारी थके

नैनमेरे न पायो मुरारी । अँधेरी निशामें पियारी पुकारे हहारी हहारी बिहारी कहांरी ॥ ३८ ॥

जापजप्यो नहिंमंत्रथप्यो नहिंवेदपुराण सुनोनबखानो।बीतिगयोदिनयोंहींसबैरसमो-हनमोहनकेनाबिकानो।चेरोकहावत तेरोसदा पुनिऔरन कोऊमैं दूसरोजानो । कैतोगरीब कोलेहुनिवाजनतो छोड़ो गरीबनिवाजको बानो ॥ ३९ ॥

जाहित मातुको नाम यशोदासो बंशको चन्द्रकला कुलधारी । शोभा समूहमई घन आनँद मूरति रंग अनंग जुवारी । जानि महासहजैरिझवारउदार बिलास मैं रास बिहारी । मेरो मनोरथहू पुरवो तुम हो जो मनोरथ पूरणकारी ॥ ४० ॥

श्यामतन श्याममन श्यामहीं हमारो धन आठौयाम ऊधो यहां श्यामहीसों काम है । श्यामहिय श्यामजिय श्यामबिननाहीं हितिय अन्धेकीसी लाकड़ी अधार एक

श्याम है। श्यामगति श्याममति श्यामही प्रतापपति श्यामसुखदाई सो भुलाये घर धामहै। ऊधो तुम भयेबौरे यहां पातीलैआय दौरे योग कहां राखैं हमरोम२ श्यामहैं ४१॥

श्यामद्रुम श्यामतम श्यामनिशि श्याम मग श्यामबन श्याम नभश्याम घनश्याम हैं। श्याम नैनी श्याम बेनी गूँधीश्याम माणिकसों दीन्हीं खौरिश्याम करी चलै कामश्यामहैं। मंसाराम चोलीश्याम भुजन कसी है बामधरे चीरश्याम काम भौर भीर श्याम है । श्याम कुञ्जधाम सरंजाम श्याम केंकैचली श्याम श्याम श्याम जहां श्याम श्याम श्यामहैं ॥४२॥

सोवत माहिं जगावतुहौ पिय सोयरहौ सारी रैनिपरी है। नींदकीमारी अहौं अल-बेली सोरसकी बात सबै बिसरी है। नेक न लाज पिया तुमको तुमनेकसीबात पै ठाट धरी है। बारहिंबार जगावतुहौ पिय क्या मेरी छाती मैं थानी धरी है ॥४३॥

छज्जन चारु बिछज्जनहूँ, बिधना सुख सेइकै तोहिं करी है । रूपकी आगरशील उजागर करसाकेग्रह आनिपरीहै । खोलिकै बन्द दिखाइदे योबन तेरे नैननमेंमेरी प्रीति धरी है । मेरी तौ प्रीति लगी तेरे ऊपर क्यों नहीं छाती मैं थाती धरी है ॥ ४४॥

कंकण करणकल किंकिणी कलित कटि कंगनकंगूर कुचकेशकारी यामिनी । कानन करनफूल कोमल कपोलकंठ कम्बुक कपोत ग्रीव कोकिला कलापिनी ॥ केसरि कुसुम्भ कलधौतिकी कछूनक्रान्ति कोबिद प्रवीण बेनीकरिवर गामिनी । कोक कारिकासी किन्नरीक कन्यकासी कीधौंकामकी कलासी कमलासी कोई कामिनी ॥ ४५ ॥

आईऋतुपावस न आयो पतिप्राणप्यारो मेंघन बरजु आली गरज सुनावैंना। चातृक हटकु बकि बकि नहिं फोरैंकान दादुरनदपटु भूलेशब्दहू सुनावैंना ॥ मैंतो अतिबिरह व्यथामेंभई व्याकुल सु जुगनू चमकिचित्त

चिनगी लगावैंना। आली भौंर हू न गावैं मोर शोर ना मचावैं घटा घुमड़ि न आवैं जौलौं श्याम घर आवैंना ॥ ४६ ॥

प्रतिपै न जैहै पतिजैहै बिनपति रैहै हरखु हिरैहै री न रैहै सुधि धामकी। निशा हहरैहै बहु झंझा झहरैहै हत्त तन थहरैहै कहां रैहै सुधि धामकी। अगिनि तनछैहै जबदामिनी दरशैहै कामिनी डरैहै फहरैहै फौजकामकी। मान मिटिजैहै औ गुमान ढहिजैहै जबघन घहरैहै तब ऐहै सुधिश्यामकी ॥ ४७ ॥

गगन गरजि छायो मेघजोर झरि लायो त्रिविधि समीर बह बिबिध भयावनी। कोकिला कलोलकरैं मोर बोलैं चहूँओर कोपि कामआयो जुअकेली जानि कामिनी ॥ ऊधोजूशरीरसुख सबकोऊ चाहतहैं कठिन कठोरहै पराई पीर पावनी। मारे डारे मदन मरोरेडारैं दादुर सुदाबे मारैं बादर जराये मारैं दामिनी ॥ ४८ ॥

पवन झकोरैं झकझोरैं बुन्दबारैं घने घने.

घनघोरैं घोरैं दौरैं चहु ओरैंरी । विज्जुछटा कोरैं बिनखोरैं जी रसाल जोरैं आवत अषाढ़ भरी ठौर ठौर बोरैंरी । खोरैं प्रेमझोरैं चित्त धीरजे बिथोरैं नहीं मानत निहोरैं कान दादुर इमि फोरैंरी । तोरैं लाज छोरैं कुलकानि बरजोरैं बीर मोरनकी शोरैं मेरे मनही मरोरैंरी ॥४९॥

आई ऋतु पावस प्रबल चहुंओर घेरि फेरिफेरि होति धुरवानहूं की धूकैंरी । दादुर पपीहा बक झिल्ली गजगान सुनि ध्यान न रहत ज्ञान मुनिनकी चूकैंरी । प्रीतम विदेश चैन पायो ना सँदेश याते परसि समीर सीरी उठैं हिय हूकैंरी । एरी तन फूकैं देखि बादर कनूकैं अरु हूकैं सम लागत मयूरन की कूकैंरी ॥५०॥

ग्रीषम सताई मुरझाई अकुलाई महा ताप तन ताई हित मूरति भुलाईरी । पावस प्रचण्ड सो अखण्ड जलधार मेघ चपला चमंकि देखि डर उपजाईरी । शरद . हेम-

न्तहू बिताई सुख सेज परि जागी नाहिं नेक पाय शिशिर निकाईरी । भैरव सो एरी मति धारिले अनोखी गतिफेरहु सुहाई सो बसन्त ऋतु आईरी ॥५१॥

झूमि २ झूमै मानो भूमै परसत आय दशहू दिशान घूमै दामिनी लये लये । धूम धार धूसरित धूम से धुकारे कारे धुरवान धामे क्षितिछायेसोछयेछये । श्रीपति सुजान कहैं घरी घरी घहरात तपत अतन तन ताप सों तये तये । लाल बिन लाज कैसे चादर रहेगी मोहिं कादर करत आय बादर नये नये ॥५२॥

बरसतमेहनेहसरसत अंगअंगझरसतदेह जैसे जरत जवासोहै । कहै पदमाकरकलिंदि नके कदम्बनपै मधुपन कीन्होआयमहतम वासोहै । ऊधोयह उधम जतायदीजो मोहन सों ब्रजमें सुवासोभयो अगिन अवासोहै । पातकी पपीहा जलपानको न प्यासोकाहू बीथित बियोगिनिके प्राणनको प्यासोहै ५३॥

पीवकहाँ कहिदेव सो सावसं पावस में रसबीच कहाहै । जीवननाथके साथ बिना शिवमापत् हैं तनजीव कहां है । बानी सुनी जबते तबते यह जानी न जात सो पीव कहांहै । पीवकहां कहिके पपिहा केहि सों तुम पूछत पीवकहां है ॥५४॥

भावन ते मनके बिछुरे जबते तबतेतनकाम सतावन । तावन देह समीर करै बदरा लखि मोर लगे कलगावन । गावन घेरि घटा बरसै जियको सगरे बिधिहै तरसावन। सावन कौन उपाय सखी हियलाय मिलौं अपने मनभावन ॥ ५५ ॥

गरजेघनघोरघटाघुमड़ीजबते बिरहाजुम योसरजी ।सरजीव भयोमृगदाढूर चंद लिये रतिनागर की मरजी।मरजी जोउंठी पिककी धुनिलै चपला चमकी न रहैबरजी। बरजी बरजी जियको सजनी भयो चातक मोजियको गरजी ॥५६॥

प्रीतम न आयेजांय द्वारिकामें छाये

ऊधो पाती न पठायो यहां पावसकी हूकहै। मेघघहराने जललागे झहरानेअब कामशर ताने उरबेधत अचूकहै। झिल्लीकीझलक दुजबीजुरीकी चमक तीजे मेघकेधमकते उठत तनचूक है। दुख सुखकासे कहौंप्रीतम न आये मौन कोकिलाकी कूकते करेजा टूक टूकहै ॥ ५७ ॥

नयनको तरसैये कहाँलौं कहाँलौं हियो बिरहागिनितैये। एको घरी न कहूँ कल-पैये कहां लगिप्राणनको तलफैये। आवै यही अबजीमें बिचार सखी चलि सौतिहू के घरजैये। मानघटेते कहाघटिहै जुपै प्राणपियारेको देखनपैये ॥५८॥

योगकी न कहियो बियोगकी न कहियो कछुलोगकी न कहियो न शोककी सुनाइ-यो। हितकी न कहियो अहितकी न भा-षियोजू चितकीन कहियो नहीं चेतकी चेताइयो। पूँछैं जो प्रवीण बेनी रसिक गोपालल्लाल गोपिन को हाल तो बिहाल

डमिगाइयो । ऊधोमनभावन सहजसुभावन सों सावन सुहावनको आवन सुनाइयो ५९॥

सूनोंके परमपद ऊनोंके अनन्तमद नूनोंके नदीशनदइंदिरा झुरैपरी । महिमा मुनीशन की सम्पति दिगीशनकी ईशनकी सिद्धिव्रज बीथीबिथुरैपरी । भादोंकी अँधेरी अधराति मथुराके पथपायकै सँयोगदेव देवकीदुरैपरी। परावार पूरण अपार परब्रह्मराशि यशुदा केकोरैं एकबारही कुरैपरी ॥ ६० ॥

देशबिनु भूपति दिनेशबिनु पंकज फणेश बिनुमणि औ निशेषबिनु यामिनी । दीप बिनुगेह औ सुगेहबिनु सम्पति अदेह बिनु देह घनमेंहबिनु दामिनी। कबिता सुछंदबिनु मीन जलबून्द बिनु मालती मलिन्दबिनु होतिछबि छामिनी । दासभगवंतबिनु संत अति व्याकुल बसंतबिनु कोकिल सो कंत बिनुकामिनी ॥ ६१ ॥

आई निहारि बिना हरि हारीसोप्यारी सखी सुख काज बिसाराति। बूझतिहूं चुपचाइ

लजाइ विषाद भरी नाहिंबैनं उचारति । शंकित है मन चिंतति राधिका आन तिया रति चित्त विचारति। तातियको निजनाथ के साथ यों नैनन आगे प्रत्यक्षनि हारति ॥ ६२ ॥

पियप्यारे तुम्हैंचिरलौं चितधारिथक्यो छबिभारन कातरहै । तनतापर तापरच्यो अति मैनके प्यासके त्रासतैं आतुर है । रसपीबोचहै सुखसों अधरानको आनन तेरो सुधाधर है । बिन मोलही मोल लियो सो लसै तिनसों हँसिबोलि कहाडरहै ६३॥

प्रथम पचीसहू के बैरको न्यवारतिहौं छठयें अठारह औ पन्द्रह चढ़ाय के । चौबिस बत्तीस सत्ताइस सतावति हैं तातै क्षिति सुतसों उठत अकुलायकै । भाषै शिव प्यारी प्यारी को सँदेशो लिखिप्यारे सुख बैन कह्यो पथिक बुझायकै । जीवत जो चाहैं कान्ह तुरतमों मिलैं आन्नि नातो नाक जाती है भुजन्क ऋतु खाय कै ॥६४॥

अजब पखेरू एकहाड़है न चाम जाके आप उड़िजाय पर पंखन देखात है । ताके बार बीनि २ बसन बनावैं लोग ओढ़ितन मेलैं दिव्यरोजही दिखात हैं । जपतपयोग-वारे षटरस भोगवारे लालचन्द्र ओढ़ि २ हिये हरषात हैं । सुरमुनि ईशनको पण्डित कबीशनको मत सबको है यहै वाको मांस खात हैं ॥६५॥

दोहरा छंदछप्पै बैतगजलहू सुनावैकोई दादरा सुनावैतऊ देतनापशमहै । पाहुन जो आवैताहि पानिहू न देत यह जानतजहान यही कुलकी रसमहै । मोहर रुपैयाकहौ कौड़ीको चलावैकौन बाहर न जानपावै भौन की भसम है । लइबे को होइ तो हजारंनपै हाथफेरैं बाजे२ लोगनकी देइबे की कसमहै ॥ ६६ ॥

गरज परेते कहाकहतेहैं आपकान लाय बिथा सबही सुनिलेतेहैं । माँगनसे कहत देतेहैंदियाहै फेरिदेंगे औ कहेंगे और कर

देतेहैं।कातलायदेते दिलासा अकुलाओमत हँसदेतेबनके खराब करदेतेहैं। देनेरकहत सुनेनेपरैं लोगनते देनेको नछोड़ैं फेरिपीछे दगादेतेहैं ॥ ६७ ॥

प्यारी की ठोढ़ीको विंदु दिनेश किधौं बिसराम गोबिन्दके जीको। चारुचुभ्यो कणिका मणि नील को कैधौं जमाव जम्यो रजनीको। कैधौं अनंग शृँगारको रंग लिख्यो बर मंत्र बशीकर पीको। फूले सरोज में भौंरी बसी किधौं फूल शशी मय लग्यो अरसीको ॥ ६८ ॥

ये दिनरैनि प्रभामें भरेरहैं वे छितिहीन ह्वै प्रातसुहावत। स्वच्छता सोहिं रही इनमें उन अङ्क में श्यामलता सरसावत। भेदसबै मुखके औ मयंकके जेते हुते भुवनेश बतावत। ताहू पै भूलिकै एहो चकोर कहांमम आननमें टकलावत ॥६९॥

आँखिनमैं पुतरीह्वैरहैं हियरामैंहराह्वैसबै रसलूटैं। अंगनसंग बसैंअँग रागह्वै जीव

तेजीवनमूरि नं छूटैं । देवजू प्यारेके न्यारेसबै गुणमोमन माणिकते नहिंछूटैं। और तियानते सौबतियांकरैं मोछतियांते छिनौजब छूटैं ॥ ७० ॥

मान यथारथ स्वारथको बिनती जुदे देवन जायकरी है । सो सुनिकै हिमवान हिये निज आनँदकी उघरी सुघरी है । बूझतिहौं तुमसों मृगलोचनि रीति नई यह जानि परी है । जारसनेह सदा शिवने कह जार शिवा अर्धंग धरी है ॥ ७१ ॥

लैसुख सिंधु सुधा मुख सौतिके आयेइते रुचि ओठ अमीकी। त्योंहीं निशंकलई भरि अंक मयंकमुखी सो सशंकित जीकी । जानिगई पहिंचानि सुगंध कछु घिन मानि भई मुख फीकी । आछे उरोज अँगौछ अँगौछनि पोंछति पीक कपोलन पीकी ॥ ७२ ॥

बैठ्यो बनबीथिन बनायदरबारनव पल्लव गिलमऔ गुलाबनकी गद्दीहै । कीन्हे कील कोकिल नवीननवासिंदापात झारिदे

मिसल दफ्तर कुलरहीहै । बिरंहपुराये निज अमल लिखायलायो हरैं२चातुरीसों चापत चुहहीहै। कीन्हे सलतंत निजसंत-औसंतनपै कामक्षिति कंतको बसंत मुतसहीहै॥ ७३ ॥

होतीपतझार मेरीहोतीरी सँभार सुधिजो कहूँ रसालहूको मौरइक पावतो । कोकिला भँवर बोलसुनतो परायेदेश पारधीकीपौरिपै परेवाजिमि धावतो । फूलेफूल देखि कैसे भूलते वे हमैंआली जोकोऊ बसंतहूकी एक तानगावतो । आजुकालिह वाहीदेश औरै ऋतु व्हैहै आली होतीरी बसंत तो हमारो कंत आवतो ॥ ७४ ॥

केसर सुरंगहूके रंगमें रँगोगी आजु और गुरु लोगन की लाजको पेहलिबो । गाइबो बजाइबोजूनाचिबोनचाइबोजूरसबशह्वैकेहमैं सबीबिधि झेलिबो।ठाकुर कहति बालहोंनी तौकरौंगी सबएक अनहोनी कहौ कौनीबिधि ठेलिबो। करकुचपेलिबो गरेमैंभुज मेलिबोजो ऐसी होरी खेलिबो तो हमतो न खेलिबो७५

जीवनको त्रासकर ज्वालाको प्रकाशकर भोरहीते भासकर आसमानछायोहै। धमका धमक धूप सूखत तलावकूप पौनको न गौन भौन आगीमें तचायोहै। ताकिथाकि रहेजाकि सकल बिहाल हाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहूरूपमान जगमोचनको तीसरे त्रिलोचनको लोचन खोलायोहै॥ ७६॥

एअलिएकंतकंतपायन परेहैंआइ हौंनजद हेरीगुमानबज मारेसों। कहैंपदमाकर वै रूसिगेसुएसीभईनैननतेनींदगई दाहके दवारेसों। रैनादिन चैनहै न मैनहै हमारेबस ऐनमुख सूखत उसास अनुसारेसों। प्राणनकी हानिसी दिखान अबलगीहै हाय कौन गुणजानिमान कीन्हों प्राणप्यारेसों॥ ७७॥

हारहीके भार उरभार ना सम्हारै नारि अलप अहार रसबासके अहार हैं। सीरते सिरात ताते तांती है है जाति डोलै पवनके परस प्यारी पानकीसी डार है। कहैं कवि

आलम न रतिहू नरम्भा औनमैन का घृताची ऐसी रूपकी अपार है। बानिक बिचित्र और चित्रमैन ऐसी कोऊ चित्रलिखि पूतरी जियाई करतार है॥७८॥

जेते सबतरुवर तरल बिलोकियत बाटिका बिटपलता जेती सुख कारीहै। करतोऽदई जोदया करिकै हमारे हेत रचना नवीन करौं बिनय पुकारीहै। मेटती हिये को ताप लपटि २ आय कहै शिव आज सखी शपथ तिहारीहै। फरतेपुरुषजे निकरते सबहोती तौ सुफल मनकामना हमारीहै॥ ७९ ॥

इतिश्रीकाव्यसंग्रह समाप्तः॥